गुरुवाणी

देश, जाति, धर्म, ऊँच-नीच से परे समता और समवर्तिता का व्यावहारिक आचरण ही मनुष्यता है।

–पीठाधीश्वर बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी

अघोरेश्वर निनाद

अघोरान्नाऽपरो मन्त्रो नास्ति तत्वम् गुरौः परम्।

R.N.I.UPHIN-2000/3008 Postal No-G-2/VSI (E)-16/2022-24

युग-उद्धारक मुनि विज्ञानी। बाबा गौतम औघड़दानी।।

वर्ष- २६, अंक १५, वाराणसी | शनिवार १५ अगस्त २०२६ | सहयोग राशि ४.२५

उत्तम चरित्र से सम्यक सफलता

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी का आशीर्वचन

मुड़िया साधुओं!

आज जिस यज्ञ की पूर्णाहुति में आप सब लगे हुए हैं, उससे यह प्रेरणा लेनी चाहिये कि दुर्गा सप्तशती में वर्णित राजा सुरथ और सुमेधा दोनों आपके अभ्यन्तर में ही है। उन्हें जागृत करके आप अपने गन्तव्य स्थल परमात्मतत्व तक पहुँच सकते हैं। इस कार्य में सम्यक आप तभी प्राप्त कर सकते है जबकि आपका चरित्रबल उत्तम हो। रामायण में आप राम का चरित्रबल देखें, जिसके सामने रावण जैसे महारथी को पराजय का मुख देखना पड़ा। जिस समय रावण मरण शैय्या पर काल का ग्रास बन रहा था, उसी समय अयोध्या नरेश श्रीराम के कहने पर लक्ष्मण जी उनके पास पहुँचे और रावण से कुछ जानना चाहे।

रावण ने अपनी मृत्युजन्य पीड़ा को सहते हुए लक्ष्मण से कहा- "मैं तुम्हारे राम से पराक्रमी, धनवान, बुद्धिमान था, जिस कारण से पराजय का मुख देखना पड़ रहा है वह है राम का "चरित्र बल"। केवल इस एक सर्वोपरि विशेषता के कारण विजयश्री आज राम का चरण चूम रही है।

आज समाज को विकृत करने वाला यदि कोई विषय है, तो वह है दहेज प्रथा। तमाम कन्यावाले वर के पिता अथवा संरक्षकों द्वारा अपमानित होकर घर से दुत्कार दिये जाते हैं, क्योंकि उनसे दहेज की रकम भरपाई नहीं होती। कभी-कभी तो विवाहित कन्याओं को अपने पिता के अर्थाभाव के कारण अत्यन्त अपमानजनक दु:ख भोगना पड़ता है। यहाँ तक कि काल के मुख में भी जाना पड़ता है।

यज्ञ-यज्ञादि कराने वाले एवं पुरोहित परम्परा में लिप्त पंडित, पुरोहित, ब्राह्मण आदि जातीय परम्परा भी आज हमारे समाज के लिये घातक होते जा रहे हैं। इसके चलते कुछ लोग गर्भाधान से लेकर मृत्युपर्यन्त जितने भी संस्कार होते है, उन सभी संस्कारों पर समाज से कर के रूप में बहुत साधन ले लेते हैं और ऐसे ही लोगों को दान देकर हम समाज के दान-दाताओं में अपने को सर्वोपरि बताने का ढिंढोरा पीटते है। दान तो सुपात्र को इस प्रकार दिया जाना चाहिये कि दाहिन हाथ देये तो बायां भी न जानने पावे। गुप्त दान अत्यन्त महत्वशाली दान बताया गया है। भजन और मनन करने की पद्धति एवं यौगिक क्रिया कोई रामायण, महाभारत और पुराणों की कथा नहीं है जिसे गा-गाकर सुनाया जा सके। यह तो एकान्त में गुरु की कृपा से ही जाना जा सकता है। रामायण महाभारत श्रव्य ग्रन्थ है इन्हें क्रिया में परिणित नहीं किया जा सकता है। यदि क्रिया में किसी ग्रन्थ का आधार लिया जा सकता है, तो वह है "त्रिपिटक" जिसमें महात्मा बुद्ध के चरित्र निर्माण सम्बन्धी विचार संग्रहित है।

धर्म का सम्बन्ध भोजन से भी जोड़ा जाता है। पर सनातन धर्म इतना कमजोर नहीं, जो लहसुन प्याज खा लेने से हिल जावे। आपको जो रुचे, पचे उसे आप भोजन करें। उससे आपका शरीर पुष्ट रहेगा और आपका मस्तिष्क चिन्तनीय विषय का चिन्तन करने के लिए स्वस्थ रहेगा।

कृत्रिम सहानुभूति वाले बहुत होते है, वास्तविक सहयोगी कम होते है। हमारे देश में जो कमी है, उसके कारण यही है। देश में तो और सब चीजे जो क्रमश: बढ़ रही है पर चरित्रोत्थान उतना नहीं हो रहा है जितना होना चाहिये। चरित्र शिक्षा की संस्था में विद्यालय ही है। चरित्रहीन जीवन,जीवन नहीं है। तुलसीकृत रामायण में वर्णन है कि राम ने लक्ष्मण को मृत्यु शैय्या पर पड़े रावण के पास भेजा उस समय रावण ने लक्ष्मण से कहा कि तुम्हारा भाई राम हमसे हरेक क्षेत्र में पिछड़ा है। मुझ में जो एक कमी है, वह चरित्र की है, इसी का परिणाम है कि तुम्हारे भाई के सामने मुझे पराजित होना पड़ा। चरित्र से मनुष्य सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर सकता है।

यदि हमारे बच्चे चरित्रवान बन जाये तो समाज बहुत बड़ा लाभ उठा सकता है। यदि बच्चों में चरित्र हीनता एवं क्षुद्रता का संचार हुआ तो समाज में बड़ा उथल-पुथल हो जायेगा और समाज अवनति के गर्त में चला जायेगा। आज के परिवर्तित समाज में वे पुरानी धार्मिक प्रवृत्तियाँ विलुप्त हो गयी है जबकि राजा साधु सन्तों का आदर करते थे। यदि अध्यापकगण इस कार्य में दत्त चित्त हो जाये तो समाज का बड़ा भारी कल्याण होगा। बच्चों में ग्रहण शक्ति बहुत अधिक होती है। जो रंग इन पर चढ़ता है वह अमिट होता है। बच्चों को प्रभावित करते समय उनकी मनोभावना को समझना चाहिये। यदि इनके साथ कठोरता क्रूरता का व्यवहार करेंगे तो उनके मन पर बड़ा विकृत प्रभाव पड़ेगा। इससे उनका क्रूर कठोर स्वभाव बन जाता है जिससे समाज सुधारक के स्थान पर वे विध्वंसक बन जाते है। इसलिये उनके साथ हमें सेवा के आचरण करना चाहिये जिससे उनके ऊपर कोई गलत प्रभाव न पड़े। इसका परिणाम यह होगा कि उनके अन्तर्गत छिपी भावनाओं से समाज लाभान्वित न हो सकेगा। अत: हमें ऐसा करना चाहिये कि बच्चों की छिपी अच्छाइयाँ बाहर आवे जिससे समाज लाभ उठा सके। यदि उनमें कुछ बुराइयाँ हो तो उसे हटा कर अच्छाइयों को उभारने का प्रयत्न करना चाहिये।

अध्यापकों से मैं निवेदन करूँगा कि वे अपने आचरण व्यवहार से बच्चों की अच्छाइयों को उभारें। जब कभी हम इन बच्चों के सामने जायें तो अपने सर्वोत्तम गुणों के साथ उपस्थित हो। क्योंकि उनमें नकल करने की प्रवृत्ति होती है। वे हमारे व्यवहारों की नकल करते है। बच्चों के लिये क्या हमें करना चाहिये क्या कहना चाहिये, इसका ध्यान रखना चाहिये। ज्ञान बोध का कार्य तो बिना देशकाल परिस्थिति ज्ञान के बिना नहीं हो सकता।

जीवन में तृप्ति के बिना कुछ भी अच्छा नहीं लता। यदि हम तृप्त है, तो हरेक बुरी चीज अच्छी, हरेक कमी पूर्णता के रूप में दिखाई पड़ती है। अत: तृप्ति निधि के बिना सम्पूर्ण सांसारिक भोग व्यर्थ है। तृप्ति मय जीवन ही सही जीवन है। अन्यथा तृप्ति निधी के बिना सम्पूर्ण सांसारिक भोग व्यर्थ है। तृप्तिमय जीवन ही सही जीवन है। अन्यथा तृप्ति विहीन जीवन का जीना न जीना बराबर है। अत: कैसे जीना चाहिये इसकी जानकारी हमें प्राप्त करनी चाहिये। वरना वह जीना जिसमें हम एक तरह से जल रहे है महाताप है। चरित्र से तृप्ति मिलती है। इसी चरित्र प्रधानता से ही सदैव

शेष पृष्ठ- 2 पर

सम्पादकीय

इच्छा और संकल्प

औघड़ संतों द्वारा वेद-पुराणों, आध्यात्मिक ग्रंथों के गुढ़ अर्थ को बड़े ही सरल शब्दों में आमजन के लिए बता दिया जाता है। परमपूज्य भगवान अवधूत राम जी ने अपने वाणियों में सरलता से ऐसे तथ्यों को खोल दिया गया है। जिससे मानव का मन उसे अत्यन्त शीघ्रता से बोधगम्य कर लेता है। उनके कहे गए वाक्य के अनुसार दुर्बल हृदय इच्छा करता है। जबकि सबल हृदय संकल्प करता है। इसका अर्थ है मात्र शेखचिल्ली की भांति किसी अभीष्ट की प्राप्ति के लिए अपने मन में लड्डू फोड़ते रहा जाए तो उसे किंचित भी लाभ नहीं होता। जबकि किसी कार्य का संकल्प उस कार्य को मन, कर्म, वचन एवं दृढ़ता से लगन के साथ किए जाने का नाम है।

संकल्प का अर्थ जबतक वह कार्य पूरा न जो जाए, उसे दत्तचित्त होकर एकाग्रता के साथ पूरा कर लेने का है। इसमें तप, संयम के साथ समय एवं ऊर्जा का लय भी समाहित रहता है। यद्यपि अन्य कमियों की भांति आलस्य, प्रमाद आदि कारक मार्ग के व्यवधान अवश्य हैं, परन्तु निरन्तर प्रयत्नशील रह कर अपने अंदर के संकल्प शक्ति को जाग्रत करके साधारण मनुष्य अभीष्ट की प्राप्ति कर असाधारण कार्य कर लेता है। मन में अगर कोई सिद्धि को ठान लिया जाए तो संकल्पवान के लिए वह अवश्य पूरा होता ही है। जबकि नाना प्रकार के विघ्न संकल्प को मात्र इच्छा में न्यून कर देने को आमादा रहते हैं, फिर भी यदि मन में दृढ़ इच्छाशक्ति बनी रहे और अर्जुन के मछली की आंख की तरह ध्यान एकाग्र हो तो यह बड़ा सरल हो जाता है। क्योंकि ईश्वर ने संकल्प शक्ति का अनुदान हम सबको समान रूप से प्रदान किया है। यह हमारे ऊपर निर्भर करता है कि उसे हम कैसे पूरा करें। मानव का मन स्वयं से ही बहाने बनाकर साधनाओं की कमी को व्यवधान मान भाग्य भरोसे बैठ जाता है, वो निश्चित ही वे मात्र भाग्यवादी कहलाते हैं, न कि पुरुषार्थी।

जबकि सतत, सबल, पुरुषार्थ द्वारा अपने आत्मविश्वास के साथ प्रतिदिन हम थोड़ा-थोड़ा भी उस दिशा में गमन करें और अपने मन की कमजोरियों, असमर्थता, अशक्तता, असहायता को आड़े न आने दिया जाए तो हमारे अंदर चौगुनी कार्य करने की शक्ति एवं सामर्थ्य उमड़ पड़ती हैं और अंततः विकास कर वह मस्ती का जीवन व्यतीत कर सकता है। महाकवि कालीदास से लेकर कवि भूषण तक ऐसे सैकड़ों दृष्टांत हैं जिसमें मनुष्य के अन्दर एक छोटी सी चिंगारी उसे क्रियाशील बनाकर चमत्कृत कर देती है। यानी प्रत्येक व्यक्ति में असाधारण शक्तियां सुषुप्ता अवस्था में पड़ी रहती हैं, जैसे अनाज का बीज जब नमी एवं सूर्य की उष्मा पाता है तो वह अंकुरित हुए बिना नहीं रहता । इसी प्रकार व्यक्ति के अन्दर अपने विकास की असाधारण क्षमता पड़ी है। बस आवश्यकता है उसे जाग्रत कर क्रियाशील बनाने की।

औघड़ आश्रमों को मानव की कार्यशाला भी कहा जा सकता है जहां कोरा सिद्धान्त न होकर, क्रियान्वयन का महत्व होता हैं। मात्र राम अथवा हनुमान का नाम जप करने से वह आनन्द नहीं मिलता जो उनके गुण और आचारण को अपनाने से प्राप्त होता है। इसीलिए मन भर, ज्ञान से, कण भर आचरण को महत्व दिया जाता है। प्रबल शक्तिवाला मनुष्य किसी भी विघ्न बाधाओं यथा मनोविकारों की परवाह किए बिना साहस पूर्वक अपने संकल्प लिए हुए कार्य को अंजाम देने को ठान लेता है तो वह निश्चित ही सफलता की ओर अग्रसर हो समाज को प्रेरणा देते हुए जीवन में असाधारण सोपान को प्राप्त करता है।

C-अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान् के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक **अरुण कुमार सिंह** द्वारा महादेव प्रेस, बी.3/335, रविन्द्रपुरी कॉलोनी, भेलूपुर, वाराणसी (उ0प्र0) से मुद्रित एवं प्रकाशित।
सम्पादक : चन्द्र नाथ ओझा
ग्राफिक्स : नित्यानन्द उपाध्याय
☎ **9452713030, 9794487878**
e-mail–Neenad@aghorpeeth.org
www.aghorpeeth.org

उत्तम चरित्र से सम्यक सफलता

सुख शान्ति बनी रहेगी।

मैं उस ईश्वर को भी धन्यवाद देना चाहता हूँ जिसने ऐसे स्वस्थ वातावरण का निर्माण किया है जिसमें ऊँची बातों को सोचने, समझने, विचारने तथा मनन करने का अवसर मिलता है। मैं भगवान के प्रति कृतज्ञ हूँ। जो हमें ऐसा बताया है कि इस विषय वातावरण में हमें अन्य विचारों के लिये आगे बढ़ा रहे है।

थोड़े व्यक्ति ही देश में एक विशिष्ट वातावरण बना सकते है।

समूह के शैशव काल में ही बहुत सी कठिनाइयाँ, घेराव और परेशानियाँ उत्पन्न हुई। पर इनसे हमने कुछ लाभ ही उठाया है और आशा करता हूँ कि उनसे भविष्य में भी लाभ ही होगा क्योंकि कठिनाइयाँ ही किसी संस्था या मनुष्य के अस्तित्व में विचार पैदा करती है और उसके उचित अस्तित्व तक पहुँचाती है।

कठिनाइयाँ मनुष्य के जीवन को नया मोड़, नया मार्ग देती हैं। इसलिये मनुष्य की अपनी कठिनाइयों के साथ डट कर लगे रहना चाहिये। यदि उससे बिचलेंगे। जरा भी पांव हटायेंगे तो जो उचित निर्भीकता का मार्ग प्राप्त होने वाला है, वह नहीं प्राप्त होगा।

आज के जन जीवन में जो व्यग्रता आकुलता एवं क्षोभ फैला है। उसे यदि हम आपसी चर्चा का विषय बना देते है तो भी इस तरह से दूषित वातावरण का संकेत अनेक लोगों तक पहुँच सकता है जिससे लोग अपने आप में तैयारियाँ कर सकते है और इस तरह की परिस्थितियों से बचने का मार्ग निकाल सकते है। हमारा जो चिन्तन है, जो आचरणीय गति है, उसके लिये बहुत बड़ी पार्टी या संगठन की आवश्यकता नहीं। उसके लिये ऊँची जाति, बहुत बड़े धर्म या विद्वता की भी आवश्यकता नहीं। यह तो एक निजी कोष है, यदि आप उसे एकत्रित करे तो लड़ सकते हैं। इस गंगा यमुना की भूमि के लोग ऐसे पवित्र जलवायु और मिट्टी में पले है कि उनके हृदय की विशालता बहुत दूर तक व्यापक हो सकती है और वे अपने समाज एवं देश को समस्याओं के साथ अन्य राष्ट्रों की समस्याओं पर प्रभावशाली ढंग से विचार दे सकते हैं, सहयोग दे सकते हैं।

थोड़े व्यक्ति ही देश में एक विशिष्ट वातावरण बना सकते है। कृष्ण जितना नजदीक पाण्डवों के थे, कौरवों के नहीं थे। क्योंकि पाण्डव संख्या में कम थे। बहुत संख्यकों के तो बहु विचार होते है।

अतः हमारे थोड़े से ही सदस्य अपने का एक उच्च विचारक के रूप में इस देश में देते है तो वही हमारे लिये पर्याप्त होगा और हम इस घोर अत्याचार के प्रति कुछ कर सकते है। समूह के जो विचारक है, उनके विचारों को अपने चिन्तन को गोप्य रूप में कन्याकुमारी तक फैलावें और तब उसका विस्फोट हो तो उसका बड़ा सराहनीय असर होगा।

हम भक्ति की भावना से प्रेरित हो। राष्ट्र हित में कुछ कर डाले। इसी पकार जो एकौहम् का जो वेद वाक्य है, उसकी गति को पढ़ सकते है। ऐसी प्रेरणा हमें बराबर होती रहती है जिसे पकड़ कर हम अपने समाज, राष्ट्र के लिये बहुत कुछ दे सकते है।

सत्य का अवलम्बन

पृष्ठ तीन का शेष

है वह हजारों मनकों में अलग-अलग चमकने लगता है, वह सत्संग एवं गुरुवचन को मनन कर अपने जीवन को सार्थक बना लेता है वह न केवल सच्चे सत्य विचारों का मंथन करता है बल्कि कार्यरूप में परिणित कर वह समाज में अग्रणी की भूमिका निभाता है। देर सबेर सभी आस-पास उसके मुरीद हो जाते हैं, उसमें वह कार्यशक्ति जाग्रत हो जाती है जिसके बल पर वह दूसरों के लिये कठिन लगने वाला असाध्य कार्य बड़े ही सलिके एवं सरलता से कर गुजरते हैं। उनके लिये क्षण-प्रतिक्षण अवसर पलक-पाँवड़े बिछाकर प्रतीक्षारत रहता है। उनका अकेलापन उन्हें कुछ सार्थक कर सकने के समर्थ बना देता है, सत्य का आचरण-कर्ता, धर्ता मन, वाणी एवं कर्म से निरन्तर पावन बनता जाता है, वही असली धार्मिक होता है। सत्यनिष्ठ व्यक्ति चाहे जीवन के किसी भी क्षेत्र में हो वह सदा ही सत्कार, आदर का पात्र होता है, वह स्वाभाविक रूप से परिश्रमी एवं कर्त्तव्य के प्रति निष्ठावान होता है।

जैसा कि "सफल योनि" में भी उद्धृत है कि सर्वेश्वरी यानी सर्वोच्च सत्ता, जगन्माता का साधक सत्यवादी, जितेन्द्रिय, परोपकारी, निर्विकार व सदाचारी होता है वह गम्भीर होता है। अतः हम सभी को संत के गुण यानी "सार-सार को गही रहै, थोथा देई उड़ाई" को अपनाते हुए अपने साथ परहित, जनहित को दृष्टिगत रखते हुए निर्भीकता, सच्चाई एवं ईमानदारी से अपने दायित्व का निर्वहन करना श्रेयस्कर है जिससे पग-पग पर सत्य का प्रकाश हमारा मार्ग प्रशस्त करता रहेगा ताकि हम सभी "असतो माँ सद्गमय" के मार्ग का अनुसरण करें।

सत्य का अवलम्बन

''सत्यं वदं, धर्म चरं'' की शास्त्रोक्त उक्ति आज भी उतनी ही महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक है, जैसे वैदिक काल में भी थी। सत्य का आचरण यानी मन कर्म वाणी से सत्य का अनुपालन मनुष्य को अन्ततोगत्वा चरम सुख की प्राप्ति करता है; जिसके सहारे व्यक्ति धर्मानुकूल आचरण करने में भी आनन्द की अनुभूति करता है। सत्यभाषी व्यक्तित्व का धनी व्यक्ति वास्तव में धनी होती है, वह प्राकृतिक सम्पदा का स्वामी होता है, उसे छाया की तरह जीवन में आने वाले सुख-दु:ख प्रभावित अथवा अप्रभावित नहीं करते; क्योंकि सत्य की पूँजी उसे इन सभी थोथी, अमर्यादित आसक्तियों एवं वासनाओं से रक्षा-कवच का कार्य करती है। ईश्वर या प्रकृति ने मनुष्य के लिए सत्यशील राह पर चलने को सुगम बनाया है; परन्तु यह तो अपनी मानसिक कमजोरी है कि हम सत्य को छोड़कर असत्य के आचरण को लाभकारी समझ बैठने की भूल करते हैं जिसका खामियाजा भी अन्तत: उस पात्र को भुगतना ही पड़ता है। सत्य तो वह मणि है जिसको धारण करने से जीवन में अपने आप कई सद्गुण छाया की भाँति पीछे-पीछे स्वमेव लग जाते हैं, वैसे भी किसी भी वाक्य के पूर्व सत्य लग जाने से ही भाव बदल जाता है, एक पवित्रता की आभा आने लगती है, इसीलिये विश्वके हर देश में सत्य को शपथ पत्र के रूप में प्रमाणिक माना जाता है तथा मानस में भी गौरी माता ने ''सुनि सिय सत्य आशीष हमारी पूजहिं मनोकामना तुम्हारी'' के रूप में सीता जी को सत्य आशीष प्रदान किया गया है, जो फलित होता है।

संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं, उन्होंने ईमानदारी से सत्य का अनुशरण अनुशीलन किया है। सत्य एक विराट व्यापक शब्द है जिसमें अनेकानेक मणिमुक्तक गूँथे हुए हैं, बचपन में मोहन दास के बालमन पर ''सत्य हरिश्चन्द्र'' नामक नाटक का इतना अधिक प्रभाव पड़ा कि कालान्तर में उन्होंने सत्य एवं अहिंसा के बल पर दिग-दिगन्त में फैली अंग्रेजी साम्राज्यवादी शासन की चूलें हिला दी। उनके नेतृत्व में सत्याग्रह के बल पर आज हम स्वतंत्र भारत के वासी कहलाने एवं विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के स्वशासन में सांस लेने के अधिकारी बन पाये है। कहा जाता है कि ''ईश्वर के घर देर है अंधेर नहीं है'' यानी ''जैसी करनी वैसा फल आज नहीं तो निश्चित कल।'' कहने का तात्पर्य यह है कि एक साधारण व्यक्ति यदि क्षणिक लाभ को तिलांजलि दे दें तथा असत्य के शार्ट-कट को छोड़कर सत्य के लम्बे पथ का अनुसरण वह करता रहे तथा अपने मार्ग से विचलित न हो तो निश्चय रूप से वह आने वाले कल में विजेता की भाँति चमकते एवं दमकते रहने के लिये अपना स्थान सर्वथा सुरक्षित कर लेता है। गोस्वामी जी ने भी कहा है कि ''साँच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप, जिनके हृदय साँच है, उनके हृदय आप'' यानी यदि एकमात्र सच्चाई के पथ पर ही हम चलते रहे एवं तद्नुसार अपनी मर्यादा बनाये रक्खे, तो व्यक्ति एक तप:शील की भाँति वह सब कुछ उसे अपने आप बिना विशेष प्रयत्न के ही प्राप्त हो जायेगा, जिसके लिये सामान्य व्यक्तियों को अलग से विशेष प्रयास करने की जरूरत होती है।

सत्य शुद्ध अघोर के नियमों का नाम है वह अभेद है शिव-शक्ति का समुच्य है, सत्य, शाश्वत होता है ''रमता है सो कौन घट-घट में विराजत है'' का नाम है, उसमें बनावटपन या कृत्रिमता का सदैव अभाव होता है। एक प्राकृतिक पुष्प से ही सौरभ सुगंध की छटा बिखरती है न कि प्लास्टिक फूल से। वट-वृक्ष का नन्हा सा बीज यदि असली है तो उसमें पूरे वृक्ष को प्रकट करने की अदम्य क्षमता विराजमान है, उसे केवल अनुकूल वातावरण की आवश्यकता होती है, सत्य ही प्रकृति का चमत्कार है, सत्य के ही साथ विश्वास भी जुड़ा हुआ है, सत्य एवं विश्वास में जुड़ाव, सम्बन्ध सूर्य-तपिश या चन्द्रमा और चाँदनी का है, दोनों एक दूसरे के पूरक है।

हमारे राष्ट्र के संविधानवेत्ताओं ने भी इसीलिए ''सत्यमेव जयते'' को राष्ट्रीय सद्वाक्य के रूप में अपनाया है तथा कनिष्ठ से लेकर सर्वोच्च न्यायालय तक में इसी के अनुसरण को सर्वमान्य किया गया है। चलती आम भाषा में भी हम कहते हैं कि झूठ के पाँव नहीं होते अर्थात् जहाँ सत्यता का विशाल वट-वृक्ष अपनी छाया देता है वहाँ असत्य अधिक काल तक टिक नहीं सकता, ठीक उसी प्रकार जैसे सूर्य के उदित होते ही अंधकार अपने आप तिरोहित हो जाता है। अत: सौभाग्यशीलता, निर्भयता, सदाशयता, कर्मठता का जन्म सत्य की कोख से ही होता है। जिसके मानस में सत्य का उदय हो जाता है वह नर या नारी आत्मविश्वास से लबरेज रहते हैं, वे बुद्धिमान की श्रेणी में गिने जाते हैं, उनकी मेधा शक्ति दिन प्रतिदिन प्रखर होती रहती है, उन्हें छलकपट, धोखाधड़ी या फरेब नहीं करना पड़ता, न तो उनमें किसी प्रकार का दिखावा या दम्भ ही होता है क्योंकि इस पूँजी का स्वामी खरे-खरे स्वर्ण का स्वामी होता है, उसे पीतल या अन्य धातु पर स्वर्ण की कलई करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। वे नर से नारायण की श्रेणी में आ जाते हैं। दूरदराज तक ऐसे व्यक्तित्व की आभा विकिरण की भाँति सुप्रकाश फैलाती है, वे चाहे गृहस्थ हो या जीवन के किसी क्षेत्र में हो, स्वाभाविक रूप से वे अधिकांश जनों के आदर के पात्र बन जाते हैं। यद्यपि सत्य का आयाम बड़ा ही विशाल विराट है, जो सब हम अपनी नंगी आँखों से स्पष्ट देखते हैं, वही सत्य नहीं है वह जो एक समय काल के लिये एक स्थान पर सत्य होता है तो दूरस्थ अवस्थित व्यक्तियों के लिये असत्य का आभास कराता है जैसे भारतवर्ष में शाम अमेरिका में दिन का होना सिद्ध करता है। यदि हम हवाई जहाज की यात्रा के अन्तर्गत सागर को ऊँचाई से देखें तो उसकी गगनचुम्बी तरंगे स्थिर दिखती हैं, धरती पर अवस्थित चौड़ी सड़कें सँकरी एवं ऊँची-ऊँची अट्टालिकाएँ छोटी-छोटी दिखती है यानी सत्य दृश्यमान भी है तथा अदृश्य भी है। हम जानते हैं कि हमारे सात पीढ़ी से पूर्वज अमुक-अमुक थे, उक्त सत्यता को श्रवण यानी श्रुति करके ही मानना पड़ता है, जिसमें आस्था एवं अटूट विश्वास का पुट होता है। इसी प्रकार हिन्दुओं में शवयात्रा के समय ''राम नाम सत्य है'' की प्रतिध्वनि से शाश्वत ईश्वर के अस्तित्व को ही एकमात्र सत्य माना गया है जबकि इसके विपरीत मुस्लिम बन्धुओं के जनाजे में मौन होकर अल्लाह को एकमात्र सत्य समझने की परम्परा है। अत: सत्य को मुखर होकर तथा मौन होकर दोनों ही स्थितियों में ''सत्यं ब्रह्म, जगत मिथ्या'' को अंगीकार किया जाता है। सत्य को अप्रिय बनाकर अभिभाषण में त्याज्य कहा गया है, माँ यदि अपने बच्चे को उसके स्वास्थ्य को दृष्टिगत रखते हुए मिठाई न होने का बहाना बनाती है तो उसे असत्य या झूठ की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता, इसी प्रकार यदि किसी के प्राण पर आसन्न संकट आ गया हो तो उसके रक्षार्थ बोला गया झूठ सत्य की ही भाँति प्रतिष्ठा पाता है। सत्यता एक ऐसी प्रभावशाली स्थिति का नाम है जो एक न एक दिन प्रकट होके ही रहती है, और छद्मवेशधारियों, ठगों का वर्षों से बनाया गया किला साम्राज्य ध्वस्त होने में तनिक भी देर नहीं होती, जिसका दृष्टान्त आये दिन भारतवर्ष में घटने वाली दिन प्रतिदिन घटनायें एवं घोटालों के उजागिर होने से हो रहा है। सत्य आचरणकर्ता का जीवन बड़ा ही निराला एवं मस्त होता है, उसे भौतिकता की कमी कभी प्रभावित नहीं कर पाती क्योंकि उसके मस्तिष्क की सोच ही तद्नुसार ढल जाती है, साथ ही उसे कुछ भी अप्राकृतिक अथवा अस्वाभाविक नहीं करना पड़ता, सब कुछ प्रकृति के नियमानुसार चलता रहता है जबकि एक झूठ बोलने के आदी अथवा असत्य आचरण वाले व्यक्ति को उस झूठ को सदा याद रखने का तनाव बना रहता है जिससे कि भविष्य में उसे हेठी या जगहँसाई का सामना न करना पड़े। असत्यवादी की स्थिति उस नकल करते विद्यार्थी की हो जाती है जो परीक्षा कक्ष में पकड़े जाने पर नाना प्रकार से अपने बचाव के लिए गिड़गिड़ाता रहता है जबकि निर्भय सिंह की भाँति एक ईमानदार व सत्याचरण वाला विद्यार्थी अन्यथा समय न गवाकर निर्धारित तीन घंटे के एक-एक क्षण का अधिकाधिक सदुपयोग कर अपने कार्य में संलग्न रहता है एवं अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हो जीवन धन्य बनाता है। वह समाज के लिये अनुकरणीय बन जाता है।

सत्य की महिमा को अत्यधिक स्पष्ट करते हुए ''अघोर वचन शास्त्र'' के तीसरे अध्याय में इसे स्थान दिया गया है तथा सत्यभाषी को सदैव कर्मरत रहने वाला जीवन के अमूल्य एक-एक क्षण का सतत सदुपयोग करने वाला तथा दुर्गुणों से सदैव दूर रहने वाला कहा गया है। सत्य एवं परिश्रम के बल पर की गयी कमाई को सद्फल कहा गया है। सत्यार्थी की अपने पाँव पर सतत दृष्टि होती है उसे अपने धड़ के संचालन में सुविधा होती है एवं पथ में ठोकर लगने की संभावना न के बराबर होती है। उसे दूसरे को नीचा दिखाने की प्रवृत्ति नहीं होती, उसकी दृष्टि विशाल होती है, उसकी दृष्टि सदैव गुरु के पद-नख में होती है, उसे तृष्णा पिपाशा या सांसारिक रोग कष्ट नहीं देते। सत्य का मार्ग सभी धर्मों में मैत्रीकारक, स्नेह कारक होता है, सत्य के अनुयायी चाहे वे किसी धर्म, जाति या सम्प्रदाय के हो, वे जहाँ विराजते हैं, सभी को अपने आस-पास शीतल छाया ही प्रदान करते हैं वे सभी के उपकारक होते हैं। सत्यार्थी, सतपात्र होता है वे निर्भीक एवं आत्मविश्वासी होते हैं, वे जग के पीड़ाहारी यानी सन्त करि नाई गुरु ईश्वर की छाया में विश्वास करते हैं उनका विश्वासी मत हर स्थिति परिस्थिति में धैर्यवान की तरह अडिग होता है, वे कुम्हड़ बतिया की तरह साधारण अंगुली दिखाने या वायु के अंधड़ में गिर नहीं जाते उन्हें अपने आचरण पर भरोसा रहता है तथा कठिनाई में वे दूसरे के काम आते हैं, मुसीबत में साथ देते हैं तथा ईश्वर के कृपा पात्र बनते हैं। मनुष्यों का जीवन-दर्शन समुन्नत बनाते हैं।

यद्यपि सत्य का आचरण या अघोर का आचरण, सरल बनना बड़ा ही दुष्कर एवं दुरुह कार्य है, यह कहने में जितना सरल है उतना ही आचरण में कठिन भी है, सरल यानी तरल यानी निर्दोष, निर्मल, विकार रहित होने को ही सत्य का आचरण या अघोर के एक गुण से सुसम्पन्न होने का नाम है, उस जातक का आहार-विहार, आचार-विचार अपने आप परिष्कृत हो जाता

शेष पृ.2 पर

सत् विचारों का प्रागट्य ही ईश्वर के आगमन का पूर्वाभास है

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी का आशीर्वचन

धर्मबंधुओं,

आत्माराम के कीर्तन के बाद श्रीगुरुदेव ने कहा उपस्थित मातायें एवं धर्मबंधुओं, आज गोष्ठी का तीसरा दिन है। बहुत से आपके मित्र सहयोगी अपने नगर को जा चुके है। निरर्थक चर्चा नहीं है। अभी तक के विचार सराहनीय एवं शोभनीय थे क्योंकि सार्थक बातें थीं। हमारे विश्रामपुर के ठाकुर साहब कह रहे थे कि हम लोगों में वैमनस्य क्यों होता है? मनुष्य की कमजोरी है द्वेष। घृणा, ईर्ष्या करने वाले मनुष्य न होकर शैतान होते हैं। मानव तन में क्रूर आत्मायें राक्षसी प्रवृति हैं। स्वार्थ का टकराव झगड़े का कारण है। आप अपने को उस बुराई से बचावें। शैतान इंसान बन कर आता है। उनको पहचानिये। अपना हाथ इंसान को दें, न कि शैतान को। ईश्वर भी आपकी अनजान में रक्षा करेंगे। जान बूझ कर बुराई करें तो वह आपकी रक्षा नहीं करेगा। ईश्वर उसी की मदद करता है जो अपनी मदद स्वयं करते हैं। सज्जनों को शैतान की दृष्टि से ओझल रहना चाहिये। किसी को बुरा कहने को अंगुली न उठावे क्योंकि ऐसा करने से एक अंगुली उसकी ओर होगी तो तीन अंगुलियां आपकी ओर होंगी। ऐसा चर्चा यथा सम्भव सभाओं में न करें। वाणी का उपयोग सन्तों, पवित्र कर्मों की सराहना में लगावें।

पंडाल में आये अबाल वृद्ध नारियों के लिये यह बातचीत है। वशीकरण एक मंत्र है तज दे वचन कठोर। सहयोग नम्र होने से स्वयं मिलेगा। साथ ही प्रसन्नता मिलेगी। अपनी वाणी को दूषित करने से हृदय का हुलास दूषित ही जाता है। यह अशोभनीय है। शाबर मंत्रों का प्रयोग सभी करते पाये जाते हैं। ये स्वयं सिद्ध हैं। इसका प्रयोग रोज करके कुपरिणाम पाते हैं। महिलायें प्राय: इन बातों का प्रयोग करके औरों की उपेक्षा की पात्र बनती हैं। कुछ लोग वंश वालों पर इनका प्रयोग करते हैं। सह लेते हैं। परन्तु दूसरे नहीं करेंगे।

निर्मल वाणी का प्रयोग ही सभी को वश में लावेंगा। जिन बातों से आपको दु:ख हो दूसरों के लिये कभी न करें। यदा कदा अपभ्रंश शब्द निकल भी जाय तो उनसे बचने का संकल्प लेवें।

मन स्वस्थ, सबल बनाने वाले काम करें। मन को खेद देने वाले कर्म न करें उनसे भविष्य अन्धकार मय दिखता है। अच्छे वायुओं, देवताओं तथा शब्द के अविर्भाव से मन प्रसन्न होता है। दु:सह वायु के आने से बुरे कामों में प्रवृत्ति होगी। ज्ञान से उसे पहचान कर बचने का प्रयास करे। पवित्र वायु के प्रवेश में अच्छे आचरण स्वयं होने लगेंगे। यही देव कृपा की पहिचान है। उस समय के संकल्प करगत आमलक के समान सुगम होंगे। इसलिये महात्माओं, सन्तों, विद्वानों के सत्संग से नाड़ी की गति सुधरे तथा देव के प्राकट्य से हम पुन: अच्छी कामों में लग सके। इनको सदा पहचानने की चेष्टा करें। ज्ञान का यही सच्चा उपयोग है। ज्ञान भी अपनी ही स्मृति है। वेद आदि भी इन्हीं ज्ञानों की श्रुति स्मृति हैं। केवल उसे भाषाबद्ध किया गया पुस्तकाकार रूप दिया गया। आपके अन्दर का देवता, आपको अच्छा, भला बुरा बतला देगा। इन संकेतों का सुनने वाला बुरे से बचेगा, अच्छा बनेगा। वह बिना शारीरिक कष्ट के विचार मात्र से मिलेगा।

मंत्र जाप से नाड़ियों को स्वस्थ एवं स्वच्छन्द बनाया जाता है। आने वाली घटनाओं का पूर्वाभास मिलता है। ईश्वर का आगमन भी इसी प्रकार मंत्र का स्वयं उच्चारण रोमांच, सत्पुरुषों का दर्शन, अच्छे विचार आना, आत्म देवता के मन में प्रागट्य का पूर्वाभास है। आप उस प्रसन्नता को शब्दों में नहीं कह सकते। यह सभी को सुलभ है। साधु, महात्मा, फकीर, मूर्ख नहीं है। वे आनन्द के खोज में लगे हैं। मति की गति के मुताबिक सत्संग के प्रभाव को वही जानता है जो सत्संग करता है। बुरा साथ वाला नहीं बता सकता। बड़ों की संगति करें अच्छे विचार वाला ही बड़ा है चाहे वह नीच कुल में भी क्या न पैदा हुआ हो। मीरा, रविदास की शिष्या थी। वैष्णव आन्दोलन के समय भी ऐसा हो चुका है। आज सभी की जबान पर मीरा की चर्चा है। राजे, महाराजे, सेठों को तो उनके जीवन में भी सभी न जान पाये। पर सन्तों को लोग घर, घर, गाँव-गाँव जानते हैं। इसीलिये उनको अमर कहा जाता है। विद्वान क्या भोले भोल गंवार भी उन्हें न भुला सके। उनके साथ वाले भी, साहित्य काव्य, विचारों में स्थान पाकर अमर हो जाते हैं। मंत्र, क्रिया, ध्यान-धारण का यही सत्फल है। थोड़ा सुनें, उसकी चर्चा करें, उसमें नये बात विचार उत्पन्न होंगे।

आश्रम वही हो सकता है जहाँ कि वर्ण व्यवस्था नहीं होता

धर्मबंधुओं,

आज हम लोग शक्ति के आराधना के साथ नये साल का शुभारम्भ कर रहे हैं। इस अवसर पर अभी जो आश्रम और वर्ण के बारे में आपको कहा गया था, वह बहुत टेढ़ा नहीं है। वह बहुत सरल और सुगम है। आप जब तक आश्रम में रहिये तब तक वर्ण विशेष का ख्याल न रखिये। वर्ण विशेष, मैं ब्राह्मण हूँ, क्षत्रिय हूँ, मैं डोम हूँ, मैं चमार हूँ इस तरह का यदि आप ख्याल रखेंगे तो आप आश्रम में नहीं रह रहे हैं। आपका आश्रमी जीवन नहीं है। आपके हृदय में आश्रम के प्रति स्नेह नहीं है। आप कभी भी अपने जीवन में आराम का वरण नहीं कर सकते चाहे वह गृहस्थ आश्रम हो चाहे वानप्रस्थ आश्रम हो।

आप गृहस्थ और वानप्रस्थ आश्रम की हामियां तो भरते हैं। आप कहते हैं कि हम गृहस्थ आश्रम में बहुत कुछ करते हैं, हम साधु से भी अच्छे हैं क्योंकि हम उनको भी देते हैं। ठीक है, आप बहुत देते हैं। वह अच्छा है क्योंकि उनकी दशा तो हम भी समझते हैं कि वे कहते हैं कि हम तो सर्वशक्तिमान परमात्मा के पुजारी हैं फिर भी घर घर का भिखारी बनकर घूमते हैं। घर-घर का भिखारी बन कर वे इसीलिये घूमते हैं। बहुत सी मातायें धनी होकर भी भिक्षा माँग कर भगवती की पूजा करती हैं। इसलिये कि हे भगवती मुझे इस धन का, पौरुष का अभिमान नहीं है।

तो इसी निमित्त यह विषय रखा गया था कि जब तक आप आश्रम धर्म निर्वाहते हो, इस आश्रम में आकर निवाहते हो या अपने गृहस्थ आश्रम में रहते हो या वानप्रस्थ आश्रम में रहते हो, जब तक आश्रम धर्म निबाहते हो तब तक वर्ण व्यवस्था के प्रति, वर्ण के प्रति कुछ सोचते हैं, कुछ करते हैं तो आप कुछ नहीं करियेगा। आप देखिये अपने प्राइम मिनिस्टर को। वो हैं ब्राह्मण। वर्ण व्यवस्था के प्रति कुछ नहीं सोचती हैं। हरिजन के साथ भी खा लेती हैं। यदि ऐसा एको दिन करती तो कोई हरिजन उनको ओट देता। तो आप भी इसको समझ कर इस तरह का जो लाभ होने वाला है, उसको उठाइये।

आपके नौकर चाकर भाई बन्धु यदि इस तरह के छोटे कास्ट के लोग हैं तो उनके साथ दुराव न रखें। दुराव रखियेगा, घृणा करियेगा तो भविष्य अपना समर्थन नहीं करेगा। एक तरह का अपने में बहुत त्रुटियां पैदा होंगी, कमजोरियां पैदा होंगी। कोई मदद नहीं करेगा। आपके वर्ण वाले आपकी मदद नहीं करेंगे तो दोसरा काहे को मदद करे भाई? इसी दृष्टि से ठोस बात इतनी ही है कि आप जब तक आश्रम रहते हैं, किसी कास्ट के प्रति, किसी वर्ण के प्रति संदेह की भावना न रखें कि वह डोम है, वह चमार है। हम ब्राह्मण हैं क्षत्रिय हैं। आश्रम वही हो सकता है जहाँ कि वर्ण व्यवस्था नहीं होता। जहाँ वर्ण व्यवस्था हो, वहाँ आश्रम नहीं है।

अनुष्ठान

हम लोगों में तो कई कमजोरियां हैं। हम उस परमात्मा से भगवती से कहते हैं कि हमारा पूर्ण विश्वास है। आप पर हमारा पूर्ण विश्वास है आप हम पर दया कीजिये। कहाँ हमारा पूर्ण विश्वास है? पूर्ण विश्वास रहता तो उससे दया की याचना करते। तुलसीदास की एक चौपाई है, आप लोगों को भी याद होगा—

मोर दास कहाई करे नर
आस।
कहो कहा लग मोहि ताहि
विश्वास।।

मेरा दास कहा करके, मेरा भक्त कहा करके, मनुष्य की आशा करता है और कहता है कि हम आपके दास हैं, आपके भक्त हैं। उसक४ो मेरे में कहाँ तक विश्वास है?

क्रमश:

अघोर सूत्र

☞ **सामान तो एकत्र किया सौ दिन का किन्तु जिन्दगी है दो दिन की। बिस्तर से उठ नहीं पाते, संसार से उठ जाते हैं।**

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी